अफ्रीकन सफ़ारी लौड़े से चुदाई-3

“मैं फोटो देखते हुए सोचने लगी कि काश मुझे मिल जायें ऐसे लंड तो मेरी चूत की तो लाइफ बन जाए और चुदवाने में और भी मज़ा आएगा आख़िरकार जो... [Continue Reading] ...”

Story By: Juhi Parmar (juhiprmar)
Posted: Thursday, May 15th, 2014
Categories: जवान लड़की
Online version: अफ्रीकन सफ़ारी लौड़े से चुदाई-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

अफ्रीकन सफ़ारी लौड़े से चुदाई-3

मैं फोटो देखते हुए सोचने लगी कि काश मुझे मिल जायें ऐसे लंड तो मेरी चूत की तो लाइफ बन जाए और चुदवाने में और भी मज़ा आएगा आख़िरकार जो टक्कर होगी तो बराबरी की होगी।

उधर पीटर और सविता का भी आगे की चुदाई से मन भर गया, अत: अब पीटर का अगला निशाना सविता की गांड थी और मुझे लग रहा था था पीटर को चूत से ज्यादा गांड पसन्द है क्यूंकि जिस तरह से वो सविता की गांड चाट रहा था।

मुझे इस बात का अंदाजा हो गया था कि आज ये सविता की गांड फाड़ कर ही रहेगा।

पीटर ने सविता को औंधे करके कुतिया की तरह लिटाया और उसकी गांड पर अपनी हथेली फेरने लगा।

अब वो अपना लंड पकड़ कर सविता की गांड के पास थपथपाने लगा और उसकी लंड की थपथपाने की आवाज़ भी इतनी तेज़ थी कि ऐसा लग रहा था कोई चांटे मार रहा हो।

‘छट…छट’ की आवाज़ आ रही थी।

उसने अपना लंड सविता की गांड की पास सटाया और एक झटके में अपना लंड सविता की गाण्ड में गुसा दिया। सविता दर्द से तड़प उठी, उईईई माँ मर गई ई ई ई।

उसका दूसरा धक्का लगा, वो इतनी ज़ोर का था लगा कि जैसे गाण्ड में आग लग गई हो सविता और जोर से चिल्लाई, आआह्ह्ह्ह ऊओह्ह्ह्ह्ह्ह हाआआ आ य्य्य्य्यीए।

पीटर ने धीरे-धीरे लण्ड अन्दर-बाहर करना आरम्भ कर दिया।

पीटर गांड में लंड डालने के साथ-साथ गाण्ड के छेद में थूकता जाता था जिससे चिकनाई बनी रहे और लण्ड अन्दर पेलता गया।

उसकी ‘आहें’ भी तेज हो गईं और सविता के चीखें कम होती गईं।

गाण्ड का छेद थोड़ा टाईट होने से उसका वीर्य छूटने वाला था, उसने तुरंत अपना लंड बाहर निकाला और अपना वीर्य सविता की कमर और गांड पर छोड़ दिया फिर अपने लंड

से उसे मलने लगा।
उसके बाद सविता वहीं लेट गई और पीटर उसके ऊपर गिर गया। दोनों थोड़ी देर तक वहीं पड़े रहे।
फिर सविता ने मुझसे पूछा- जूही तुझे आना है क्या..!
मैंने कहा- नहीं तुम ही करो.. मैं ठीक हूँ।
पर सविता कहाँ मानने वाली थी वो उठी और मुझे पीटर से पास ले आई। पीटर लेटा हुआ था और उसका लंड सिकुड़ गया था।
सविता मुझे पीटर के लंड के पास ले आई और उसका लंड मेरे हाथ में पकड़ा दिया और कहा- इससे दोस्ती कर लो.. ये तुम्हारा बहुत अच्छा दोस्त बनेगा।
मैंने थोड़ी देर तक तो लंड को यूं ही पकड़े रहा और फिर धीरे-धीरे हिलाना शुरू कर दिया सविता ने मुझे टोका तो मैंने कहा- हिला तो रही हूँ।
सविता ने अपना पेटीकोट वहीं बैठ कर पहनने लगी।
मैं धीरे-धीरे लंड हिलाने लगी और वो अपना दानव का रूप धारण करने लगा मेरी हर थपकी पर वो और बड़ा और विशाल होता जा रहा था और कुछ ही पलों के भीतर वो अपने असली रूप में आ गया था।
मैंने उसके लौड़े को अपने होंठों से चूमा और उससे चूसने के लिए नीचे झुकि पीटर ने भी मेरे सर पे हाथ रखा और मेरे बाल सहलाने लगा।
मैं नीचे झुकी और पीटर का लंड पकड़ के अपने मुँह में लेने लगी।
उसके लंड के बाल बड़े अजीब से घुंघराले से थे, जो बिल्कुल शरीर से चिपके हुए थी।
आम मर्दों के मुकाबले पीटर की झांटें बहुत सख्त थीं।
मैं अच्छे से पीटर का लंड चूसने लगी और फिर मैं पीटर के बगल से पीटर की टाँगों के बीच में लेट गई और उसका लंड चूसने लगी।
जब मुझे लगने लगा कि अब चुदाई में मज़ा आएगा तभी मैंने उसके लंड को छोड़ा और फिर पीटर के होंठों के पास अपने होंठ लाकर चूमने लगी और चूमते-चूमते पीटर ने मुझे

बगल में धकेला और अब मैं नीचे और पीटर मेरे ऊपर था।
पीटर नीग्रो था इसलिए उसके होंठ बहुत मोटे और बड़े थे पर चूमने में मज़ा आ रहा था क्योंकि काफी मोटा था और अच्छा अहसास मिल रहा था।
पीटर साथ ही साथ मेरे मम्मों को भी अपने बड़े बड़े हाथों से दबा रहा था।
फिर उसमें मेरे कमीज को कंधों से नीचे खींच दिया और मेरे मम्मों के नीचे ले आया और फिर उसने मेरी ब्रा खोल कर फेंक दी और मेरे मम्मों को अपने होंठों से भभोड़ने और चूसने लगा कभी मेरे मम्मों के निप्प्लों को चूसने लगता तो कभी उन्हें दबाने लगता, कभी दांतों से काटने लगता, तो कभी मेरे मम्मों को अपने मुँह में भर लेता और खाने की कोशिश करने लगता, जैसे वो मेरे मम्मों को नहीं कोई सेब खाने की कोशिश कर रहा हो।
काफी देर तक मेरे मम्मों का सेवन करने के बाद वो नीचे की तरफ आया और मेरे सूट को नीचे की तरफ खींचते-खींचते चूमता हुआ नीचे जाने लगा। फिर उसने मेरी सलवार का भी नाड़ा खोल दिया और फिर सलवार और कुरता दोनों को मेरी टाँगों तक लाकर नीचे गिरा दिया।
अब मैंने सिर्फ पैंटी पहन रखी थी।
उसने मेरी टाँगों के बीच अपने चेहरे को फंसाया और मेरी पैन्टी अपने दाँतों में दबा ली, मेरी पैन्टी को वो नीचे खींचने लगा, ठीक उसी तरह जैसे वो सविता से साथ कर रहा था।
पीटर मेरी पैन्टी को अपनी दाँतो से खींचते-खींचते घुटने तक ले आया और फिर हाथों से नीचे कर दी।
अब हम दोनों नग्न अवस्था में लेटे हुए थे। पीटर मेरी चूत में जीभ डाल कर चाटने लगा और फिर थूक लगा कर मेरी चूत में उंगली करने लगा।
फिर वो मेरी चूत के पास चाटने लगा।
उसने ज्यादा देर नहीं लगाई और मेरी दोनों टाँगें फैला दीं। अब मेरी परीक्षा की घड़ी आ गई थी।
प्रचंड-मुसंड लौड़ा मेरी चूत में घुसने के लिए उतावला था, तो मैंने भी ज्यादा देर करना

ठीक नहीं समझा।
मैं पीटर का लंड अपने हाथों से पकड़ कर अपनी चूत के पास ले गई और टच करके पीटर से कहा, “नाओ फ़क मी..!”
पीटर मेरे ऊपर लेटा और अपनी गांड ऊपर की ओर उठा कर एक करारा झटका मारा।
मेरे मुँह खुला का खुला रह गया… आ..!
लंड अभी थोड़ा ही अन्दर गया था, पर वो इतना मोटा था कि दर्द बहुत ज्यादा हो रहा था। ये मेरी लाइफ का अभी तक का सबसे मोटा लंड था। अभी मेरी चूत इतनी चौड़ी नहीं भी नहीं हुई थी इसलिए दर्द और ज्यादा हो रहा था।
मैं दर्द से कराहने लगी, आअह्ह्ह्ह्ह्ह आआईह्ह्ह्ह्न्न ऊऊऊऊओह्ह्ह्ह्ह् ह्ह्ह्ह्ह् ह्ह्होहोहो ओह्ह्ह ओह्ह्ह आअह आआऐई आह्ह्हा.., बहुत दर्द हो रहा था।
मैंने पीटर से कहा- “प्लीज स्टॉप इट वी विल डू इट लेटर.. प्लीज..!”
पर वो मादरचोद पीटर नहीं माना और धीरे-धीरे और जोर से अपना लंड मेरी चूत में धकेलने लगा और धीरे-धीरे जैसे जैसे लंड अन्दर जा रहा था, मेरी पीढ़ा बढ़ती जा थी और मैं दर्द से कराहते जा रही थी।
कुछ देर चुदने के बाद धीरे-धीरे जैसे-जैसे मेरी चूत को पीटर के लंड की चोटों की अभ्यस्त हुई, वो दर्द धीरे-धीरे कम होता गया और फिर पीटर ने चुदाई की स्पीड डबल कर दी और सटाक… सटाक मेरी चूत में अपना लंड पेलने लगा।
मुझे भी मज़ा आने लगा और मैं भी अपने चूतड़ उठा-उठा कर पूरे मज़े लेने लगी।
हमने करीब दस मिनट तक ऐसे ही चूतड़ उठा कर चुदाई की, फिर पीटर का माल गिरने वाला था तो उसने अपना लंड बाहर निकाला और मैंने उससे अपने मुँह के पास ले आई और उसके वीर्य की धार इतनी तेज थी कि जैसे की चार लौड़े एक साथ मेरे मुँह पे मुठ मार रहे हों। मेरा पूरा मुँह उसके वीर्य से सना था।
फिर पीटर अपने लंड से वीर्य को मेरे मुँह पर मलने लगा और फिर सूट उठाकर उसने मेरे चेहरे से वीर्य साफ़ कर दिया और हम चुम्मी करने लगे।

हमने उसके बाद करीब 4-5 बार ऐसे ही मस्त चुदाई की और फिर पीटर का मन मेरी गांड मारने का था पर मैंने मना कर दिया।
मैंने कहा- फिर कभी आज के लिए इतना ही बहुत है। मैं अभी चार दिन सविता के साथ ही हूँ, तो हम ये प्रोग्राम कभी और बनाएंगे।
फिर अभी सविता का बर्थ-डे भी तो बाकी था। मैं सविता और पीटर तीनों फिर ऊपर के कमरे में ही आस-पास ही लिपट कर सो गए।
इस बार इतना ही, आगे मैं आपको बताऊँगी कि पीटर ने मेरी गांड मारी और फिर कैसे हमने पीटर के और दोस्तों के साथ मिलकर सविता का जन्मदिन मनाया।

आपको कहानी कैसी लगी मुझे ईमेल करके जरूर बताइएगा।
आपसे आग्रह है कि कहानी को अन्तर्वासना पर रेट जरूर कीजियेगा।
juhiprmar@yahoo.com